कृषि किरण अंक-9, जून 2020: पृष्ठ: 41-44
http://saaer.org.in

फूलों की खेती: किसानो के लिए वरदान

प्रियंका कुमावत, शीतल रावत, जगन सिंह गोरा[1] और दुष्यंत परिहार[2]

उधान विज्ञान विभाग, कृषि महाविधालय, स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविधालय, बीकानेर

[1]आई. सी. ए. आर.- केंद्रीय शुष्क संस्थान बागवानी, बीकानेर

[2]विभाग, एप्लाइड प्लांट साइंस (हॉर्टिकल्चर), बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ

फूल प्रकृति का दिया हुआ सबसे सुन्दर तोहफ़ा है, जो की शांति एवं प्रेम का प्रतीक माना जाता है। यह जन्म से लेकर मृत्यु तक के सभी तरह के सामाजिक कार्यो मे काम मे लिया जाता है। वैश्वीकरण के बाद की कृषि में फूलों की खेती एक महत्वपूर्ण व्यावसायिक गतिविधि बन गई है। फूलों की खेती परंपरागत खेती से अलग है, इसमे प्रति यूनिट क्षेत्र से अधिक उत्पादन मिलता है। फूलों की खेती छोटे और सीमांत किसानों के बीच स्वरोजगार पैदा करने और भारत जैसे विकासशील देशों में बहुत जरूरी विदेशी मुद्रा अर्जित करने की क्षमता के साथ एक व्यवहार्य और लाभदायक विकल्प के रूप में विकसित हुई है। फूलों की खेती का उत्पादन प्रति वर्ष 8-10% की दर से बढ़ रहा है। लगभग 120 देश हैं, जो बड़े पैमाने पर पुष्प उत्पादन में सक्रिय रूप से भाग ले रहे हैं। नीदरलैंड, इजरायल और कोलम्बिया, जैसे देशों की अर्थव्यवस्था पुष्प उत्पादन उद्योग पर निर्भर है। दुनिया में पुष्प उत्पादन के तहत अनुमानित क्षेत्र 2,20,000 हेक्टेयर से अधिक क्षैत्र है। विकासशील देश पिछले कुछ दशकों में अतिरिक्त उत्पादन केंद्र के रूप में उभरे हैं। भारत मे विभिन्न प्रकार की जलवायु व प्राकृति संसाधनों की उपस्थिती होने के कारण पूरे साल फूलों की खेती की जा सकती है। भारत मे पिछले कुछ वर्षो से फूलों का उत्पादन व्यवसायक रूप से होने लगा है। अच्छी विपणन और संचार सुविधाओ का इसमे पूरा योगदान है।

भारतीय मे फूलों का उपयोग

भारत में फूलों की खेती एक प्राचीन विरासत है। वाणिज्यिक फूलों की खेती हालांकि समय से ही होने लगी है। कट और पॉटेड फूलों की मांग में लगातार वृद्धि ने फूलों की खेती को भारतीय कृषि में महत्वपूर्ण व्यावसायिक स्तर पर पहुचा दिया है। निर्यात उद्देश्यों के लिए पारंपरिक फूलों की जगह कट फ्लावर के उत्पादन पर जोर दिया जा रहा है। लगभग 30% की वार्षिक वृद्धि दर (CAGR) पर बढ़ते हुए, भारत के फ्लोरिकल्चर उद्योग 19,400 करोड़ रुपये के स्तर पर है। कृषि

उद्योग मे फूलों की खेती का 1.6% हिस्सा है।

भारत में फूलो की खेती का परिदृश्य

वर्ष 2017-18 मे 3.24 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में 2.79 मिलियन टन फूलों का उत्पादन हुआ है, जिसमे कट फ्लावर का उत्पादन 0.82 मिलियन टन व लूज फ्लावर का उत्पादन 1.97 मिलियन टन हुआ। पुष्प फसलों के तहत लगभग 77% क्षेत्र 7 राज्यों में केंद्रित है: तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल, हरियाणा और उत्तर प्रदेश और दिल्ली। तमिलनाडु मे 342000 हेक्टेयर क्षेत्र मे फूलो की खेती होती है, लूज फ्लावर का उत्पादन 0.34 मिलियन टन हुआ, जो की सभी राज्यो से ज्यादा है। प. बंगाल मे कट फ्लावर का उत्पादन (0.82 मिलियन टन) सबसे ज्यादा है।

फूलों के माध्यम से व्यापार

नर्सरी

नर्सरी कृषि का वह हिस्सा है जहा पौधों का पोषण व देखभाल बड़े पैमाने पर तब किया जाता है, जब तक वह रोपण के लिए तैयार नहीं होते। इसमे बेहतर गुणवत्ता वाले पौधे तैयार किए जाते हैं और इन्हे अन्य घर के बगीचे और व्यावसायिक बगीचो के लिए बेचा जाता है। नर्सरी में प्रवर्धित युवा पौधों को खुदरा नर्सरी या थोक नर्सरी में बेचा जा सकता है। नर्सरी में जड़ी-बूटी, झाड़ी, छोटे व बड़े पौधे और बोन्साई जैसे विभिन्न पौधे हो सकते है। सजावटी उद्यान न्यूनतम रखरखाव, लागत और देखभाल के साथ स्थापित किए जा सकते हैं। नर्सरी व्यवसाय वहा ज्यादा लाभदायक है, जहा घर और सार्वजनिक उद्यान, राजमार्गों के लिए पौधे लगातार मांग मे रहते है।

लूज फ्लावर

गुणवत्तायूक्त, एक समान आकार, समान रंग, धब्बो से मुक्त पौधे जिनका उत्पादन वर्षभर होता है, निर्यात के लिए सही होते है। भारत लूज फ्लावर के उत्पादन में अग्रणी है जैसे गुलाब, चमेली, रजनीगंधा, गेंदा, गुलदाउदी, क्रॉसेंड्रा, चाइना-एस्टर और डहलिया घरेलू बाजार में काफी मांग मे है।

कट फ्लावर

भारत मे मुख्यतया गुलाब, कारनेशन, गुलदाउदी, ग्लेडियोलस, जरबेरा, अंथुरियम, डहेलीय, ओर्किड लगाए जाते है।

पत्तियां

फूलों के पौधों को पत्तियों के रूप में अधिकतम आकर्षण मिल रहा है, व्यापक रूप से गुलदस्ता तैयार करने और पश्चिमी फूलों की व्यवस्था में उपयोग किया जाता है। उनके

पास अधिक गुणवत्ता रखने और न्यूनतम देखभाल की आवश्यकता होती है, इस संबंध में हम कम निवेश के साथ अधिक उत्पादन की उम्मीद कर सकते हैं।

बीज उत्पादन

गुणवत्तायूक्त बीज सामग्री की घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय बाजार दोनों में मांग है गेंदा, पेटुनिया, वर्बेना, कैलेडियम, पैंसी, वायोला, स्टॉक, हॉलीहॉक, कॉसमॉस आदि का बीज उत्पादन कुछ ग्रामीण क्षेत्रों में किया जाता है, जहां जलवायु और अन्य कारक गुणवत्तायूक्त बीज उत्पादन के लिए सही होते हैं। भारत में, अकेले पंजाब में 50% फूलों के बीज का उत्पादन होता है और अभी भी, इसके अंतर्गत क्षेत्र का विस्तार करने की बहुत गुंजाइश है। बीज उत्पादन के लिए बीजारोपण, परागण, एमस्कुलेशन, बीज की परिपक्वता अवस्था की पहचान, कटाई और बीज के प्रसंस्करण के ज्ञान और कौशल की आवश्यकता होती है।

बोन्साई

बोन्साई एक ट्रे मे लगाया जाने वाला पौधा है, जिसे लघु आकार मे रहने के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है। इसमे पौधे की लंबाई 2 - 60 इंच की हो सकती है। मुख्यता यह एरुकेरिया, बोगेनविलिया, फाइकस, बरगद की बनाई जाती है। बड़े शहरो मे घर व ऑफिस मे यह रखी जाती है। इसको बनाने के लिए ज्ञान और कौशल की आवश्यकता होती है, इससे कम निवेश के साथ अधिक आमदनी प्राप्त की जा सकती है।

फूलो का मूल्य वर्धन

फूलो के आर्थिक मूल्य और उपभोक्ता अपील को बढ़ाने के लिए इनका मूल्य वर्धन किया जाता है। व्यापक रूप से हस्तनिर्मित कागज, लैंपशेड, मोमबत्ती, होल्डर्स, जूट बैग, फोटो फ्रेम, बक्से, किताबें, पोटपौरी, कार्ड और कई उपहार बनाने के लिए फूलो का उपयोग किया जाता है।

पोटपौरी: बैचलर बटन, कोकस्कोम, चमेली, गुलाब की पंखुड़ियाँ, बोगनविलिया

सूखे फूल के पॉट और गुलदस्ते: सूखे फूल, हैलीक्राइसम और फर्न की पत्तियाँ।

फूलो से निम्न्न उत्पाद बनाए जा सकते है: वेनी, गजरा, माला, पुष्प रंगोली, सूखे फूलों की व्यवस्था, पुष्प शिल्प, पोटपुरी, पंखुरी , गुलकंद (गुलाब), गुलरोगन, गुलाब जल, पुष्प रंग, और पुष्प तेल निष्कर्षण।

प्राकृति रंग

एंथोसायनिन, कैरोटिनॉयड्स बीटालिन्स और करक्यूमिन जैसे प्राकृतिक की मांगों में वृद्धि हुई है। कृत्रिम रंगों के विषाक्त प्रभावों के

बारे में जागरूकता के परिणामस्वरूप प्राकृतिक रंगो की भारी मांग पैदा हुई है। विभिन्न न्यूट्रास्युटिकल कंपनिया इस प्रकार किसानों को लाभान्वित कर रही है।

तेल

फूलों से तेल निकालना भारत में एक प्रमुख उद्योग है। रजनीगंधा के फूलों का उपयोग तेलों के निष्कर्षण के लिए किया जाता है और इसे विश्व बाजार में उच्च मूल्य वाला कंक्रीट माना जाता है। चमेली के ऊतक सुसंस्कृत पौधे; सुगंधित गुलाब आदि को ताइवान, कोरिया और जापान में निर्यात किया जा सकता है। ये सभी पुष्प उत्पाद सिंगापुर के अंतर्राष्ट्रीय बाजार में बेचे जा सकते हैं।

आमदनी

पौधे से आमदनी उसके आकार, आयु और प्रजाति और बाजार मे मांग पर भी निर्भर करती है। व्यावसायीकरण के लिए इसमे जबरदस्त गुंजाइश है। सबसे महंगा बोन्साई वृक्ष सदियों पुराना देवदार है जो जापान के ताकामत्सु में अंतर्राष्ट्रीय बोन्साई सम्मेलन में 1.3 मिलियन डॉलर में बेचा गया है।

निष्कर्ष

फूलों की खेती में हमारे किसानों को उनके श्रम और समर्पण का सही फल प्रदान करने की बहुत बड़ी क्षमता है। इस तरह के पहलुओं की खोज के माध्यम से कृषि विविधीकरण की वर्तमान आवश्यकता को बढ़ा सकते हैं और यहां तक कि हमारे किसान की आय को दोगुना कर सकते हैं, जिससे उनके जीवन स्तर और उन्हें एक सुरक्षित भविष्य दे सकते हैं।